दिया गया है माँग पूरी कर ...

(5) **नौकरशाही एवं लोक व्यय में वृद्धि** (Bureaucracy and Increase in Public Expenditure)—कुछ लेखक जैसे निस्कानेन (Niskanen), ब्रेटन (Breton) नॉल एवं फायोरिना (Noil and Fiorina), आदि ने आर्थिक विश्लेषण का उपयोग नौकरशाही (Bureaucracy) के सम्बन्ध में किया है। आर्थिक सिद्धान्त की विवेचना में ऐसा बताया जाता है कि सीमान्त लागत तथा सीमान्त आय की समानता पर फर्म की अधिकतम उत्पत्ति होती है। निस्कानेन तथा ब्रेटन ने ऐसा बताने का प्रयास किया है कि नौकरशाही का विस्तार इस अधिकतम सीमा के बाद भी होता है। इसका कारण यह है कि नौकरशाही के द्वारा ही क्रेता (विधायकों) को नौकरशाही के उत्पादन फलन की जानकारी मिलती है।

दूसरा कारण यह है कि नौकरशाही द्वारा श्रम-प्रधान तकनीक को अपनाने पर बल दिया जाता है तथा विधायक (क्रेता) को ऐसी प्रेरणा नहीं मिलती है कि वह श्रम प्रधानता की डिग्री को कम कर सके। इसकी व्याख्या नॉल तथा फायोरिना ने मतदाता-विधायक-नौकरशाही सम्बन्ध के आधार पर की है। व्यक्तिगत मतदाता द्वारा जिस कर का भुगतान किया जाता है उसका सीधा सम्बन्ध मतदाताओं को उपलब्ध सरकारी सेवाओं से नहीं रहता है। अतः मतदाता वैसे विधायकों को चुनते हैं जो इन सेवाओं में विस्तार के समर्थक होते हैं। मतदाता तथा नौकरशाही के मध्य सीधा सम्पर्क इस प्रक्रिया को मदद पहुंचाता है, क्योंकि इस सम्पर्क से ऐसी जानकारी मिल पाती है कि लोक सेवाओं में विस्तार की क्या विधि है। सार्वजनिक क्षेत्र के विस्तार के फलस्वरूप मतदाता के रूप में नौकरशाही के महत्व में वृद्धि इस प्रक्रिया को और बलवती बनाती है।

(6) **मांग की कीमत लोच तथा विभेदात्मक उत्पादकता** (Price Elasticity of Demand and Differential Productivity)—बॉमोल ने एक दिलचस्प अवधारणा को प्रतिपादित किया है; यद्यपि इस

Scanned with CamScanner

ओर सर्वप्रथम पीकॉक तथा वाइजमैन ने संकेत किया था। बाद में एण्डिक तथा बेवेरका ने इसकी विवे की। अब यह बॉमोल के नाम के साथ जुड़ा है। मान लें कि निजी क्षेत्र की तुलना में सार्वजनिक क्षेत्र उत्पादकता में धीमी गति से वृद्धि होती है। यह भी मान लें कि सार्वजनिक सेवाओं की मांग की कीमत लो निजी वस्तुओं की इस लोच से कम है। कम उत्पादकता तथा कम लोच के कारण लोक सेवाओं पर कुल व्य में राष्ट्रीय आय की तुलना में अधिक वृद्धि होती है। बॉमोल का कहना है कि सार्वजनिक क्षेत्र में तकनी प्रगति की कम गुंजाइश होती है। मान लें कि एक शिक्षक 25 लड़कों की निगरानी अच्छी तरह कर सक है। तकनीकी प्रगति से इस अनुपात में अधिक परिवर्तन की आशा नहीं है। इसके विपरीत स्वच (automation) द्वारा एक तकनीशियन 4 की जगह 100 मशीन की क्रियाओं का निरीक्षण कर सकता यदि साधनों के बाजार की स्थिति ऐसी हो कि शिक्षक तथा तकनीशियन को समान या लगभग समान दे देना है तो उत्पत्ति को समान स्तर पर कायम रखने के लिए भी शिक्षा पर कुल व्यय बढ़ता जायगा।

(7) **कर के आधार की उपलब्धता** (Availability of Tax Handles)—लोक व्यय में वृद्धि का भी कारण है। निर्धन देशों में कर वसूल करना कठिन होता है, अतः इन देशों में लोक व्यय की मात्रा रहती है, लेकिन ज्यों-ज्यों कर लगाने का आधार विस्तृत होता जाता है त्यों-त्यों लोक व्यय बढ़ता जाता आर्थिक विकास के प्रारम्भिक चरण में सिर्फ भूमि ही सम्पत्ति के रूप में उपलब्ध होती है, अतः भूराजस्व आय का मुख्य स्रोत होता है। आर्थिक विकास में प्रगति के साथ-साथ कर के अन्य आधार उपलब्ध होने जाते हैं; जैसे—आय, व्यय, बिक्री, औद्योगिक उत्पादन, आदि। फलतः सरकार की आय बढ़ने लगती है जब आय बढ़ने लगती है तब प्रतिरक्षा, सरकारी कर्मचारियों के वेतन, आदि पर अधिक व्यय की मांग लगती है। रुपये उपलब्ध होने पर इन मांगों पर खर्च करने का राजनीतिक दबाव बढ़ जाता है।

(8) **मूल्य तल में वृद्धि** (Increase in Price Level)—कीमतों में वृद्धि भी लोक व्यय के बढ़ने एक कारण है। यहां महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि सरकार द्वारा खरीद की जाने वाली वस्तुओं की कीमतें नि क्षेत्र द्वारा खरीदी गयी वस्तुओं की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ती हैं। अमरीका का उदाहरण देते हुए मस का कहना है कि 1929 तथा 1974 के मध्य राष्ट्रीय आय के कीमत सूचकांक में 236 प्रतिशत की वृद्धि किन्तु इसी अवधि में सरकार द्वारा खरीदी गई वस्तुओं की कीमतें 448 प्रतिशत बढ़ीं।

(9) **सामाजिक जटिलताएं** (Complexities of Society)—सरकार के कार्यों के सम्बन्ध में हमारे वि काफी बदले हुए हैं। अब यह नहीं माना जाता कि सरकार का काम बाहरी आक्रमण से रक्षा तथा आन्त कानून तथा पुलिस व्यवस्था को कायम रखना मात्र है। आज सरकार लोगों का समग्र अभिभावक है। इसे से मृत्यु पर्यन्त व्यवस्था करनी है। इसलिए सामाजिक सुरक्षा लाभ जैसे, वृद्धावस्था पेन्शन, विकलांग क्षतिपूर्ति, आदि में सरकार को अधिक खर्च करना पड़ता है। उसी तरह शिक्षा, स्वास्थ्य, सफाई पर खर्च गया है। कल्याणकारी राज्य का व्यय पुलिस राज्य के व्यय से अधिक होगा ही।

Scanned with CamScanner